CONTENT CREATOR NAME -

Name - **DR. RAVI PRATAP SINGH**

Name of College - **SHIA P.G. COLLEGE, LUCKNOW**

Designation - **ASSISTANT PROFESSOR**

Faculty - **ARTS**

Department - **POLITICAL SCIENCE**

Gender - **MALE**

Mobile - **8299585088**

Email - **pratapravi31@gmail.com**

SN	STREAM NAME	SUBJECT NAME	TOPIC NAME	COURSE (B.A./M.A/B.Sc/M.Sc/Etc)	YEAR/SEMESTER	NO. OF PAGES	CONTENT LANGUAGE (Hindi/English)	CONTENT TYPE	CONTENT KEYWODS
1.	Arts	Political Science	History of Western Political Thought - I	B.A.	3rd	18	Hindi	PDF	

History of Western Political Thought - _I

Unit-I

भ्रमणशील शिक्षक : सोफिस्ट

सोफिस्ट भ्रमणशील शिक्षक थे। वे परिश्रमिक लेकर शिक्षा प्रदान करते थे। ये विदेशी शिक्षक थे। इन्हें तत्काली यूनानी समाज मेटिक्स (Matics) कहता था। जनसाधरण एवं विशिष्ट वर्ग ज्ञानार्जन हेतु सोटिस्टों के पास जाते थे। ये व्यवहारिक ज्ञान पर बल ज्यादा देते थे। ये भाषण कला एवं तर्क पर जयादा जोर दिया करते थे। इनको आधा शिक्षक एवं आधा पत्रकार भी कहा जाता है। इन्होनें तत्कालीन समस्यओं पर चिंतन कर समाज को जागरूक बनाने पर बल दिया। इन्होने समता, न्याय एवं भाईचारा पर बल दिया।

सिद्धांत और मत –

1. न्याय में विश्वास।
2. समता में विश्वास।
3. तर्क में विश्वास।
4. संवाद में विश्वास।
5. मानववाद एवं भ्रातृत्व में में विश्वास।
6. सत्य की सत्यता को प्रोत्साहन।
7. समाज को जागरूक किया।
8. ये अनीश्वरवादी नहीं थे।

तर्कवाद के प्रणेता : सुकरात

सुकरात एथेंस का नागरिक था। वह गुरू शिष्य परंपरा में उच्चतम स्थान सुशोभित है। सुकरात ने तर्क एवं दर्शन के अध्ययन हेतु जीवन समपित कर दिया। सुकरात विद्धता, सदाचार, आदर्श, तर्क, निर्भीकता, निडरता एवं अदम्य साहस का प्रतीक है। वह सत्य एवं ज्ञान के प्रति सदैव समर्पित रहा। सुकरात सत्य की खोज में अपना जीवन एवं प्राण की

आहुति दे दिया किन्तु सत्य के पथ से पददलित नहीं हुआ। तत्कालीन शासक वर्ग सुकरात की तर्कशीलता एवं बुद्धिजीविता से संशकित हो उठे और सुकरात पर मिथ्या आरोप लगाकार मृत्युदंड दे दिया। सुकरात ने बड़ी सहजता एवं धैर्यशीता से विष का प्याला पी लिया और सत्य एवं तर्क की रक्षा करता हुआ तत्कालीन शासक का कोपभाजन बन गया।

सुकरात का दर्शन –

सुकरात के समय यूनान में नगर राज्य थे। इन नगर राज्यों में लोकतंत्र का प्रचलन था। ये लाकतांत्रिक नगर अव्यवस्था एवं कुशासन के प्रतीक थे। अतः सुकरात ने लोकतंत्र की कटु आलोचना की। वह बुद्धिमान व्यक्तियों के शासन का पक्षधर है। सुकरात ने कुलीन व्यक्तियों के शासन को प्रोत्साहित किया। वह लोकतांत्रिक पद्धति से निम्नलिखित कारणा से संतुष्ट नहीं था –

1. प्रशासनिक एवं शासकीय अभिजनों के नियुक्ति हेतु लाटरी प्रणाली का विरोध किया।
2. सस्ती लोकप्रियता हाशिल करने के लिए नेताओं द्वारा किये जाने वाले कुत्सित प्रयास।
3. शासन–प्रणाली में लोकतांत्रिक व्यवस्था के कारण विशेषज्ञों का अभाव।
4. सर्व साधारण एवं बुद्धिमान व्यक्तियों को एक ही तराजू में तौले जाने से वह चिंतित था। इतना ही नहीं, इस समानता को वह नगर राज्य के लिए घातक मानता था।

दार्शनिक विचारक : प्लटो (427 – 397 बी.सी)

प्लेटों का जन्म 427बी0सी0 में एथेंस के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। यह काल्पनिक राज्य का प्रणेता है। इसके माता का नाम परिक्तियनी तथा पिता का नाम एरिस्टोन था। यह मातृकुल एवं पितृकुल दोनों तरफ से शासक वर्ग से सम्बन्धित था।

386बी.सी. में आपने सुप्रसिद्ध ***अकादमी*** का शुभारंभ किया। कालांतर में यह ***अकादमी*** यूरोप का प्रथम विश्वविद्यालय बना। इस शिक्षाणलय में तर्क, गणित, खगोल के अध्ययन पर बल दिया जाता था।

प्लेटो के ग्रंथ –

प्लेटो के प्रमाणिक ग्रंथ केवल 28 है। कुछ ग्रंथ निम्नवत है :–

1. **The Republic (386 B.C.)**
2. **The Statesman (360 B.C.)**
3. **The Laws (347 B.C.)**
4. **Apology**
5. **Horgias**
6. **Crito**
7. **Protagoras**

तीन कृतियां **Republic, The Statesman, Lawsx** प्रसिद्ध है।

प्लेटो पर सुकरात का प्रभाव –

1. सदगुण ही ज्ञान है।
2. शासन एक कला है।
3. विवके, साहस, संयम का गुण प्रत्येक व्यक्ति में विद्यमान रहता है।

न्याय –

न्याय की व्याख्या और प्राप्ति रिपब्लिक का महत्वपूर्ण विषय है। रिपब्लिक को न्याय से सम्बन्धित भी कहा जाता है। प्लेटो ने राज्य पारस्परिक आवश्यकताओं और अन्तनिर्भता

का प्रतीक बताया। ***रिपब्लिक*** की शुरूआत और अत न्याय के साथ होता है। प्लेटो ने प्रचलित मान्यताओं का खंडन किया। ये निम्नलिखित है –

1. न्याय का परंपरावादी अथवा सेफेल्स का सिद्धांत।
2. न्याय का उग्रवादी अथवा थ्रेसीमेक्स का सिद्धांत।
3. न्याय का व्यवहार अथवा ग्लॉंका का सिद्धांत।

रिपब्लिक में प्लेटों ने पूर्व में विद्यमान यूनानी समाज में प्रचलित धारणाओं का खंडन किया। रिपब्लिक में न्याय सिद्धांत को आंतरिक इच्छा मात्र माना गया है। मनुष्य में तीन नैसर्गिक प्रवृत्ति माना है। ये निम्न है –

1. ज्ञान।
2. साहस।
3. भूख।

इन तत्वों के समन्वय से व्यक्ति न्यायी माना जाता है। प्लेटो के अनुसार मनुष्य की आत्मा के तीन तत्व अपने निर्धारित कार्यों को करते है। प्लेटो न्याय के दो पक्ष को मानता है –

1. व्यक्तिगत न्याय।
2. सामाजिक न्याय।

न्याय सिद्धांत की विशेषताएं –

1. अहस्तक्षेप पर आधारित है।
2. सामंजस्य पर आधारित है।
3. व्यक्तिवाद का विरोधी है।
4. न्याय आत्मा का गुण है।
5. कार्य विशेषीकरण पर आधारित है।

शिक्षा सिद्धांत

प्लेटो ने रिपब्लिक में आदर्श राज्य की स्थापना हेतु दो साधनों का प्रयोग किया है–

1. शिक्षा
2. साम्यवाद।

प्लेटो की शिक्षा पद्धति एथेंस और स्पार्टा को शिक्षा प्रणालियों का समन्वय है। प्लेटो ने ऐथेंस की बौद्धिक शिक्षा पद्धति के साथ स्पार्टा की राज्य नियंत्रित सैनिक शिक्षा पद्धति को समाहित किया है। इस प्रकार प्लेटो ने नवीन शिक्षा प्रणाली का सृजन किया।

प्लेटो की शिक्षा योजना –

प्लेटो की शिक्षा योजना को दो भागों में विभाजित किया जाता है –

प्रारंभिक शिक्षा – बाल्यकाल में युवावस्था तक अपने चरित्र के प्रशिक्षण एवं उन्नीतिकरण हेतु। प्रारंभिक शिक्षा को प्लेटो तीन भागों में विभक्त करता है –

1. **जन्म में 6 वर्ष – धार्मिक, नैतिक, मानवीय।**
2. **06– 18 वर्ष – व्यायाम और संगीत।**
3. **18– 20 वर्ष – सैनिक प्रशिक्षण।**

व्यावहारिक शिक्षा –

35–50 वर्ष तक यह सोपान प्रभावी रहता है। अगले 15 वर्षों में संरक्षक राज्य के विभन्न पदों पर सेवा करते हुए उत्तरदायित्व निभाते है। 50 वर्ष तक सैद्धांतिक और व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात ही शासक बनने के अधिकारी है।

विशेषताएं –

1. शिक्षा का आधार मनोवैज्ञानिक है।
2. सर्वांगीण विकास करना है।
3. सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक शिक्षा।
4. आदर्श नागरिक

5. पुरूष–स्त्रियों की समान शिक्षा।

आलोचना –

1. उत्पादक वर्ग की उपेक्षा। प्रसिद्ध विचारक जेलर के अनुसार प्लेटों उत्पादक वर्ग के प्रति कुलीनतंत्रीय घृणा का आग्रह रखता था।
2. शिक्षा–प्रणाली अत्यधिक लंबो होने से सुरूचिकर एवं प्रभावी नहीं रहती।
3. शिक्षा–प्रणाली पर राज्य का नियंत्रण हानिकारक है।

प्लेटो का साम्यवाद

रिपब्लिक में प्लेटो ने एक नूतन, सामाजिक व्यवस्था का चित्रण किया है, जिसे वह साम्यवाद क सिद्धांत बताता है। प्लेटो का साम्यवाद त्याग, बलिदान का पर्याप्त है। वह बाह्य भौतिक दुर्बलताओं से शासक वर्ग एवं सैनिक वर्ग को बचाता है। प्लेटो अपने साम्यवाद को शासक एवं सैनिकों तक सोमित रखता है। प्लेटों की साम्यवादी योजना को दो भागों में विभक्त किया जाता है –

1. सम्पत्ति का साम्यवाद।
2. परिवार का स्त्रियों का साम्यवाद।

सम्पत्ति का साम्यवाद– प्लेटों शासकों एवं सैनिकों के लिए सम्पत्ति का निषेध करता है। वह इन वर्गों को संरक्षक/अभिभावक के नाम से संबोधित करता है। प्लेटो का अभिमत था कि, संपत्ति अभिभावक वर्ग को मदांध एवं कर्तव्य विमुख बना सकती है। अतः संम्पत्ति का निषेध कर दिया। प्लेटो तत्कालीन यूनानी समाज के दुष्परिणामों को देख चुका था और वह अवलोकन कर चुका था कि, निजी/व्यक्तिगत संपत्ति ही समस्त संघर्षों की मौलिक कारण है अतः वह अभिभावक वर्ग को सम्पत्ति का निषेध करता है।

पत्नियां अथवा परिवार का साम्यवाद –

प्लेटों ने अभिभावकगण को निजी सम्पत्ति के साथ पत्नियों के संपर्क से दूर रखा है। प्लेटों का शासक इस मर्त्यलोक पर जीवित ऋषि है। उसका न तो अपना परिवार होगा न तो अपनी सम्पत्ति। वह परिवार के उन्मूलन का तर्क देता है और कहता है कि,

परिवार के उन्मूलन से नारी जाति का उत्थान होगा। प्लेटो के अनुसार स्त्रो–पुरूष के विवाह नहीं होगा। अतः उनका अपना व्यक्तिगत परिवार नहीं होगा। वे सामान रूप से बैरकों मे रहेगें। राज्य द्वारा यौन संबधों की व्यवस्था की जायेगी। जो संतान, पैदा होगी, वह राज्य द्वारा संचालित शिशुगृहों में पलेगें। स्त्री–पुरूष संतान को और संतान माता–पिता को नहीं पहचान पायेगें।

विशेषताएं :–

1. यह अभिभावक वर्ग के लिए है।
2. इनसका आधार मनौवैज्ञानिक होगा।
3. श्रेष्ठ संतति के लिए।
4. अतः हम कह सकते हैं कि, अभिभावक वर्ग के लिए सम्पत्ति + परिवार निषेध है।

दार्शनिक राजाओं का शासन

प्लेटों का दार्शनिक शासकों का शासन मौलिक है। यह वर्ग संघर्ष समाप्त करने का सर्वोत्तम उपाय है। दार्शनिक शासक निजी स्वार्थों से मुक्त होकर जनता की सेवा में लगे रहते हैं। यह स्थिति किस भी राज्य के लिए कल्याणकारी अवस्था होती है।

प्लेटो समाज के प्रत्येक वग से बलिदान चाहता है। अभिभावक वर्ग को संपत्ति एवं परिवार से दूर रख जाता है। ताकि शीघ्र ढंग से शासक वर्ग जनता के उत्थान के लिए किया जा सके। प्लेटो का दर्शनिक राजा गुणों से सम्पन्न होता है। वह आत्मसंयम से परिपूर्ण होता है। वह न्यायप्रिय होता है तथा समस्त अवगुणों सें मुक्त होता है।

आदर्श राज्य के भौतिक तत्व –

1. न्याय
2. राज्य व्यक्ति विराट है।
3. शिक्षा
4. नागरिकों के तीन वर्ग।
5. साम्यवाद।
6. महिला–पुरूषों का समान अधिकार।
7. राज्य का स्वरूप नैतिक।

यथार्थवादी विचारक : अरस्तू (384 – 322 बी.सी)

महान मनीषी अरस्तू का जन्म स्टैगिरा नाम नगर में हुआ। यह नगर यूनान में अवस्थित है। अरस्तू के पिता राजवैध थे। वह उच्च शिक्षा हेतु एथेंस आकर **अकादमी** में भर्ती हुआ। प्लेटों के मत्यु पश्चात अकादमी में उसे वह सम्मान नहीं मिला जिसका वह हकदार है। 346बी.सी. में मकदूनिया के राजकुमार सिंकदर का शिक्षक बना। वह परामर्शदाता एवं चिकित्सक के रूप में कार्य करता रहा। उसका विवाह हर्मियास से हुआ। दामपत्य जीवन मुधर रहा। वह **लीसियम** का संस्थापक था। यह चार बड़े दार्शनकि विद्यालयों में प्रमुख था।

रचनाएं –

Politics, The Constitution

Poetics, Rehetoric, Ethics

History of Animals आदि है।

राज्य सम्बन्धी विचार –

अरस्तू के राज्य सम्बन्धी विचार पॉलिटिक्स के प्रथम पुस्तक में वर्णित है। अरस्तू ने राज्य को विकास का परिणाम बताया है। यह एक स्वाभाविक संस्था है। इसका कार्य व्यक्ति के बाधाओं को दूर करना है। यह अन्य संस्थाओं से श्रेष्ठतर एवं उच्च है। अरस्तू के राज्य विषयक विचार को निम्नलिखित क्रम से विवेचित किया जाता है –

राज्य का उभव –

राज्य एक प्राकृतिक संस्था है। इसका जन्म एवं विकास पाकृतिक रूप से हुआ। यह सर्वविदित है कि, राज्य विकास का परिणाम है। यह क्रम परिवार से शुरू होता है और राज्य पर खत्म होता है।

1. राज्य एक स्वाभाविक संस्था –
2. अरस्तू राज्य को कायनोनिया (Koinonia) मानता है। इसके अभाव में जीवन संभव नहीं है। यह व्यक्तियों को परस्पर जोड़े रहती है।

3. राज्य सर्वोच्चतर समुदाय के रूप में।
4. राज्य मनुष्य से पहले
5. राज्य अंतिम एवं पूर्ण संस्था।
6. राज्य आत्मनिर्भर है।
7. राज्य के निश्चित उद्‌देश्य।
8. राज्य संप्रभुता संपन्न होता है।
9. राज्य जनता के साहचार्य का परिणाम है।

Unit-II

प्राचीन रोम का राजनीतिक–चिंतन

रोमन लोगों ने अपने दार्शनिक विचार यूनानी लोगों से ही प्राप्त किए। वस्तुतः रोमन साम्राज्य का उदय तत्कालीन ऐतिहासिक परिस्थितियों का परिणाम था, वह किसी व्यवस्थित राजनीति–चिंतन की देन नहीं था। फिर भी रोम के लोगों ने कानून की ऐसी प्रणाली विकसित की जो यूनानी चिंतन से आगे बढ़ने का संकेत देती है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक कानूनी का विचार था। रोमन विचारको ने राजनीतिशास्त्र को नीतिशास्त्र से अलग कर दिया और राज्य तथा समाज की संकल्पनाओं में अंतर स्थापित किया। रोम के लोगों ने ही राज्य के कानूनी व्यतित्व और राजनीतिक प्रभुसत्ता के विचार का सूत्रपात किया। इसके अंतर्गत राज्य को कूनन के निर्माता के रूप में मान्यता मिल गई। यूनानी राजनीतिक चिंतन की तुलना में यह विचार एकदम नया था।

सिसरो

मार्कस तुलियस सिसरो (106–43 ई.पू.) प्राचीन रोम का कुशल वक्ता और रामर्मज्ञ था। इसने सद्‌गुण और व्यवस्था के सम्बन्ध में प्राचीन यूनानी विचारों को अपनी कृतियों के माध्यम से मध्ययुगीन ईसाई दर्शन के प्रति हस्तांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह प्लेटो और स्टोइक दार्शनिकों से विशेष रूप से प्रभावित रहा। इसके दर्शन पर इनका प्रभाव अमिट है।

राजनीतिक व्यवस्था –

सिसरों ने नागरिकों की राजनीतिक शिक्षा के लिये दर्शनशास्त्र और अलंकार के समन्वयय पर बल दिया। उसने तर्क दिया कि, सर्वोच्च मानवीय सद्‌गुण अजित करने के लिये सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। दर्शन हमें ज्ञान प्राप्त कराता है और अलंकार इसमें मानवोयता का समावेश कराता है। इसके संयोग से ही एक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण होता है। ऐसे शासन को वह संवैधानिक राज्य के नाम से सम्बोधित करता है। जिसमें मानवीय समता और दर्शन का समावेश रहता है। इसके अन्तर्गत राजतंत्र, कुलीनतंत्र और लोकतंत्र का संतुलन रहता है।

सिसरो के अनुसार सद्गुण एवं सद्विवेक उदार शिक्षा के माध्यम से अर्जित किया जाता है। वह मनुष्य को उत्तरदायी नागरिक बनाता है। उसकी दो कृतियां **द रिपब्लिक और द लेगीबस** उल्लेखनीय है। इसके अन्तर्गत उसने मानव जीवन के समस्त पक्षों एवं संविधान के समस्त पहलुओं का वर्णन है। पहली कृति के अन्तर्गत रोमन राजनीतिक व्यवस्था के प्रमुख तत्वों का वर्णन है। दूसरी कृति के अन्तर्गत शक्ति और सत्ता में अंतर किया गया है और इन्होने संवैधानिक सत्ता की आवश्यकतओं का वर्णन किया है। आपने अपने पुस्तको में स्टोइक दर्शनों को राजनीतिक सिद्धांतों का आधार बनाया है।

Unit-III

मध्ययुगीन राजनीतिक चिंतन

सामान्य विशेषताएं –

यूरोप के इतिहास में रोमन साम्राज्य के पतन से 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक के दौर को मध्ययुगीन कहा जाता है। इस युग में कोई सुनिश्चित विचारधारा का प्रणयन नहीं हुआ। इसीलिए इसे अंधकार युग भी कहा जाता है।

विशेषताएं – इसकी विशेषताएं निम्नवत है :–

धार्मिक विषयों की प्रधानता –

मध्ययुगीन चिंतन न तो इतिहास पर आधारित था, न वैज्ञानिकता पर। यह विश्वास एवं आस्था पर आधारित था। अतः इसक चिंतन के केन्द्र बिन्दु धार्मिक मोमांशा एवं आस्था है। अतः इस युग में चर्च की सत्ता का बोलबाला था।

सामंतवाद की भूमिका –

मध्ययुगीन यूरोपीय समाज पारंपरिक था। अतः सामान्ती व्यवस्था की प्रमुखता स्वाभाविक था। इसके अन्तर्गत राज्य शक्ति स्थानीय जमींदारों, जागीरदारों, सामन्तों एवं सरदारों में विभक्त रहती थी। जिन्हें अपने–अपने पद उत्तराधिकार में प्राप्त होता था। वह आर्थिक दृष्टि से भी सशक्त रहते थे और समाज के शेष वर्ग इनकें मताहत थे।

प्रसिद्ध ईसाई संत : सेंट ऑगस्टाइन

यह ईसाई धर्म के प्रारंभिक एवं प्रमुख आचार्यों में थे। इनका जन्म अल्जीरिया में हुआ था। इन्होने लैटिन अलंकार शास्त्र में प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं उसके आचार्य बने। मिलान के विशप एम्ब्रोस ने यूनानी साहित्य का अध्ययन किया और इन्होंने यूनानी साहित्य एवं ईसाई दर्शन का समावेश किया।

दो नगरों की संकल्पना –

यह इनकी महत्वपूर्ण रचना है। इन्होने बताया है कि, मानव इतिहास दो तरह के नगरों के परस्पर सम्बन्ध की प्रमुख अभिव्यक्ति है :– सांसारिक नगर और दैवीय नगर संसारिक नगर के निवासियों में स्वार्थ होता है वह भौतिक वस्तुओं के पीछे पड़े रहते हैं एवं दैवीय नगर क निवासियों में ईश्वर के प्रति प्रेम रहता है तथा वह नैतिकता पूर्ण जीवन जीते हैं तथा ईश्वर की आराधना में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं। इतना ही नहीं, वह जीवन भर मानवीयता एवं नैतिकता के प्रति समर्पित रहते हैं।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि, ऑगस्टाइन के दोनों नगर क्रमशः राज्य और चर्च के समवर्ती नहीं है। उपरोक्त अध्ययन के पश्चात कह सकते हैं कि, वह राज्य की अवहेलना नहीं करना चाहत है बल्कि राज्य के भीतर ही रहकर सतकर्म कर भौतिक बुराईयों से बचना चाहत है। उनका मानना है कि, ईश्वर के कृपापात्र बनकर ही राज्य का लौकिक उत्थान एवं जनता का सर्वोच्य विकास संभव है।

Unit-IV

चर्च राज्य विवाद

मध्य युग में चर्च की सत्ता धार्मिक सत्ता की प्रतीक थी और राज्य की सत्ता लौकिक सत्ता का प्रतिनिधित्व करती थी। इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध मध्ययुगीन राजनीति चिंतन का मुख्य विषय था। आठवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य यह विचारधारा प्रबल रहा। वैसे चर्च एवं राज्य एक ही समाज से जुड़े हुए थे फिर भी मतभेद था। ईसाई लेखकों ने अध्यात्मिक और लौकिक संसार में जिस अंतर का संकेत दिया था उसने दो शक्तियों के सिद्धांत को जन्म दिया। इससे सम्पूर्ण सत्ता पोप और साम्राज्य के प्रति विभक्त हो गयी और यह माना जाने लगा कि, ईसाई नरेश अमरत्व प्राप्त करने के लिए धर्माध्यक्ष का अर्शीवाद आवश्यक है और ईसाई संतों को लौकिक मामलों में प्रबंध में सम्राट की सहायता लेनी पड़ती थी। प्रारंभ में धरती पर शासन चलाने के लिए सामंजस्य पूर्ण विभाजन को दैवी आदेश माना गया। किन्तु बाद में दोनों मे अलगाव हो गया और कालांतर में दोनों तरह की सत्तायें अपनी अपनी शक्तियों के विस्तार के उद्देश्य से सक दूसरे की सीमाओं पर अतिक्रमण करने लगी और अन्त में लौकिक नरेशों को विजय मिला। यही मुद्दा मध्युगीन यूरोप का प्रमुख विषय था।

परिषदीय आन्दोलन –

मध्य युग के अन्तिम दौर में पारलौकिक विषयों पर चिंतन बहुत कम होने लगा और बौद्धिक दृष्टिकोण में एक नया मोड़ आ गया। इस दौर की मुख्य विशेषताएं निम्न थीं। सामंतवाद का अवशान होने लगा। राष्ट्रीय राज्यों का उदय होने लगा। वाणिज्य व्यापार का प्रभुत्व होने लगा। पोपशाही का पराभव हो गया। चर्च परिषदों का महत्व बढ़ा। अब विश्व एकता की बात की जाने लगी। राजा और जनसाधारण का महत्व बढ़ने लगा और राज्य अपने क्षेत्र के विस्तार के लिये उत्सुक रहने लगे। धार्मिक रूढ़िवादिता समाज में कम हुयी। वैज्ञानिकता का प्रभाव समाज में दिखने लगा। लोग अधिक वैज्ञानिक होने लगे और नये–नये अविष्कारों समाज को मानवीय चिंतन के प्रति आग्रही बना दिया और मानवीय चिंतन को प्रमुखता मिलने लगा।

संत थॉमस एक्विनास

ये महान धर्ममीमांशक थे। यह यूनानी विचारक अरस्तू एवं प्लेटो से बहुत ज्यादा प्रभावित थे। यह अरस्तू के पुस्तक पॉलिटिक्स से बहुत ज्यादा प्रभावित हुए और इन्होंने ग्रीक एवं स्टोइक विचारों को मसीही विचारधारा से समन्वयन कराया तथा इन्होंने नैतिकता, राजनीतिक सुचिता, सदाचार को प्रमुखता दिया। कालांतर में यही कैथोलिक दर्शन का आधार बना।

प्रमुख कृतियांः–

सुम्मा थ्योलोजिया इनकी ख्याति प्राप्त पुस्तक है, इसमें इन्होंने चार तरह के कानूनों की व्याख्या की है– 1. **शास्वत कानून (इटर्नल लॉ), 2. प्राकृतिक कानून (नैचुरल लॉ), 3. दिव्य कानून (डिवाइन लॉ), 4. मानवीय कानून (ह्यूमन लॉ)**। इस तरह एक्विनास ने प्राकृतिक कानूनों की भूमिका पर विशेष बल दिया है तथा उनका तर्क है कि सम्पूर्ण सृष्टि की तरह मनुष्यों में भी शुभ एवं सत की ओर झुकाव पाया जाता है। अतः वे इनको प्राथमिकता देते हैं।

राजनीतिक समुदायः–

इन्होंने अरस्तू के विचार का समर्थन किया है कि राज्य का अस्तित्व सदजीवन के लिए है और सर्व–हित को प्रमुखता दिया जाना चाहिए। इन्होंने राज्य को प्राकृतिक संस्था माना है, जो तर्क और विवक पर आधारित है। इन्होंने राज्य के बारे में निराशाजनक विचार नहीं प्रकट किया है। वह राज्य को मनुष्य के पाप का फल भी नहीं मानते थे। यहां पर इनका विचार अन्य ईसाई आचार्यों से पृथक था। इनका विचार था कि राज्य सद्जीवन के लिए है।

मार्सीलियो ऑफ पादुआः–

इनका जन्म 1275 में इटली में हुआ था। इन्होंने यूनानी विचारकों एवं ईसाई मत को समन्वय करके राज्य के लिए एक कुशल प्रशासन के सिद्धान्त का निर्माण किया।

इनका सैद्धान्तिक प्रतिमान लोकप्रिय प्रभुसत्ता पर आधारित था। यह ज्ञातव्य है कि, मध्य युग में चर्च की प्रधानता थी। राज्य की सत्ता गौण होती थी किन्तु आपने अपरोक्ष रुप से राज्य सत्ता का समर्थन किया है। यह अपने आप में बड़ी उपलब्धि है तथा आने वाले समय के लिए आधार बिन्दु बना। मार्सीलियो ने सबसे पहले गणतंत्रवाद का नारा बुलंद किया और आधुनिक राज्य के प्रणयन में अपना योगदान दिया।

पोप की सत्ता का खण्डन

मार्सीलियो ने अपनी प्रमुख पुस्तक **डिफेन्सर पेसिस** में पोप की सत्ता पर प्रबल प्रहार किया। मध्य युग में यह मत प्रचलित थी कि, पोप की सत्ता के अन्तर्गत लौकिक शासकों की सत्ता होती है। इन्होंने पोपतन्त्र और पुरोहित वाद की प्रभुसत्ता का खण्डन किया है। इनका मानना था कि सर्वसाधारण की इच्छा को महत्व दिया जाना चाहिए और ये सर्वविदित है कि लौकिक सत्ता सर्वसाधारण का प्रतिनिधित्व करती है। अतः धार्मिक सत्ता लौकिक सत्ता के अन्तर्गत रहना चाहिए।

सकारात्मक कानून की संकल्पना

राज्य मनुष्य को विवेकवान और सद्जीवन प्रदान करता है। अतः राज्य को इन्होंने प्रमुखता दिया। इन्होंने माना कि राज्य की ऐसी संस्था है जो विवेकसम्मत बल प्रयोग करती है। कोई भी नियम सच्चे अर्थों में विधि नहीं बनता जब तक मनुष्य रुप में कोई विधायक उसे विधि के रुप में प्रतिपादित नहीं करता। यही सकारात्मक कानून है। मार्सीलियो के अनुसार विधि निर्माण की प्रक्रिया जितना पारदर्शी होगी उतना न्यायपूर्ण होने की संभावना होती है। इस तरह हम कह सकते हैं कि मार्सीलियो की चिंतन प्रणाली के अन्तर्गत विधायक शब्द जनसामान्य का ही पर्याय है। संभवतः इसीलिए वह कहता है कि विधायक को ही अपने शासकों का चयन करना चाहिए और पथभ्रष्ट होने पर सत्ता से हटाने का अधिकार भी होना चाहिए। यही सकारात्मक कानून की अभिव्यक्ति है।

संदर्भ–ग्रंथ –

1. पी.डी. शर्मा : पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास
2. ज्योति प्रसाद सूद : पाश्चात्य राजनीतिक विचारों का इतिहास, भाग 1, 2
3. ब्रज किशोर झा : प्रमुख राजनीतिक चिंतक
4. गंगा प्रसाद तिवारी : प्रमुख राजनीतिक चिंतक
5. ओम प्रकाश गाबा : पाश्चात्य राजनीतिक विचारक
6. सी.एल. वेपर : पालीटिकल थॉट
7. डब्ल्यू.ए. डनिंग : हिस्टरी ऑफ पोलेटिकल थ्योरी
8. फास्टर एम.बी. : मास्टर ऑफ पोलेटिकल थॉट
9. के.एन. वर्मा : राज्य दर्शन